दिसम्बर माह के कृषि कार्य

किसान बहिनों एवं भाईयों, नमस्कार ! दिसम्बर माह जिसे आप मार्गशीर्ष-पौष भी कहते हैं शरद ऋतु का आगमन है । इसी माह ईसा मसीह का जन्मदिन भी आता है । लोग सर्दी की धूप का पूरा आनंद लेते हैं । हम आपके प्रश्नों पर आधारित दिसम्बर माह के कृषि कार्य बताएगें । लेख में नाप-तोल प्रति एकड के हिसाब से हैं ।

<u>तीन जरूरी बातें</u> -

- **<u>शिखर जड विकास</u>** (२१ दिन बाद) - बीजाई के २१ दिन बाद गेहूं में शिखर जडें निकलती हैं इसलिए इस अवस्था में सिंचाई बिल्कुल नहीं चूकनी चाहिए, नहीं तो पैदावार में भारी गिरावट हो जायेगी ।
- **<u>जस्ते की कमी</u>** (३० दिन बाद) - गेंहू के बीजाई के २५-३० दिन बाद नीचे की तीसरी या चौथी पत्तियों पर हल्के-पीले धब्बे जो बाद में बडे आकार के हो जाते हैं जस्ते की कमी के लक्षण हैं । इस स्थिति में तुरंत ०.५ प्रतिशत जिंक सल्फेट व २.५ प्रतिशत यूरिया का घोल बनाकर १०-१५ दिन के अन्तर पर छिडकें बरना पैदावार कम होने के साथ-साथ फसल पकने में १०-१५ दिन लेट हो जायेगी ।
- **<u>नत्रजन उपलब्धता</u>** (कुशल उपयोग) - यदि गेहूं हरी खाद या परती छोडने पर बोई गई हो तो नत्रजन की मात्रा २५ प्रतिशत कम करें । ज्यादा पोषक तत्व खीचने वाली फसलों जैसे बाजरा या ज्वार या कल्लर भूमि में बोये तो नत्रजन की मात्रा २५ प्रतिशत बढ़ा दें । हल्की मिट्टी में नत्रजन २ बार की बजाय ३ बार डालें ।

<u>गेहूं</u> - गेहूं की पछेती बीजाई दिसम्बर के तीसरे सप्ताह तक कर सकते है परंतु देरी के साथ-साथ पैदावार भी कम हो जाती है । पछेती बीजाई के लिए सोनालिका, डब्ल्यु.एस.२९१, एच.डी.२२८५, सोनक, यू.पी.२३३८, राज ३७६५, पी.बी.डब्ल्यु. ३७३, पी.बी.डब्ल्यु १३८ व टी.एल. १२१० किस्में लगायें । पिछेती बीजाई में लाईनों में दूरी कम करके ७ ईंच तथा बीज की मात्रा बढ़ाकर ६० कि.ग्रा. कर दें । पिछेती गेहूं में पहली सिंचाई ४ सप्ताह बाद करें । नवम्बर में बोई गेहूं को ३ सप्ताह होने पर पहली सिंचाई करना बहुत जरूरी है क्योंकि इसी समय गेहूं के कल्ले फूटने लगते है जोकि पैदावार बढ़ाने में महत्वपूर्ण है । हल्की मिट्टी में 1 बोरा यूरिया (१/३ नत्रजन की दूसरी किस्त)सिंचाई के बाद छिडकें तथा भारी मिट्टी में १.५ बोरे यूरिया (१/२ नत्रजन की आखिरी किस्त) पहले छिडक कर हल्की सिंचाई कर दें । इस अवस्था में खरपतवार नियंत्रण बहुत जरूरी है । इसकी विधि नवम्बर माह में बताई जा चुकी है । यदि फसल पर जिंक की कमी नजर आये तो 1 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट ४ कि.ग्रा. यूरिया के साथ २०० लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें । बीमारयों , कीटों व दीमक नियंत्रण नवम्बर माह में बता चुके है ।

<u>जौ व शरदकालीन मक्की</u> - अक्टूबर में बोई जौ को ८०-८५ दिन में दूसरी सिंचाई कर दें । दीमक लगने पर गेहू की तरह १.५ लीटर क्लोरोपायरीफास २० ई.सी. या 1 लीटर एण्डोसल्फान ३५ ई.सी. सिंचाई के साथ ही दे दें । शरदकालीन मक्की में दिसम्बर के अन्त २-२.५ फुट ऊंचाई होने पर 1 बोरा यूरिया डाल दें तथा मिट्टी चढ़ा दें इससे फसल गिरेगी भी नहीं व जल्दी बढ़वार भी होगी ।
चना, मसूर व दाना मटर - में फलियां लगने के समय सिंचाई जरूरी है तथा फली छेदक की रोकथाम के लिए १५० मि.ली. एण्डोसल्फान ३५ ई.सी. का १०० लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें व १५ दिन बाद फिर दोहरायें ।

<u>सरसों, तोरिया, राया व तारामीरा</u> - तोरिया में फलियां बनने पर सिंचाई दें तथा पकने पर शीघ्र काट लें ताकि दाने न झडे व गेहूं की फसल जल्दी लग जाये । राया व पीली सरसों में भी फूल आने पर सिंचाई दें । चेपा व बीमारियों की रोकथाम के लिए नवम्बर माह में बता चुके है । तारामीरा में सिंचाई की जरूरत नहीं होती तथा अलसी में फूल आने पर सिंचाई दें ।

<u>चारा</u> - रिजका व बरसीम की दूसरी कटाई ३० दिन के अन्तराल पर करें तथा सिंचाई कर दें । जई की दूसरी कटाई दिसम्बर के अन्त तक कर सकते है । कटाई के बाद सिंचाई करें ।

सूरजमुखी - को दिसम्बर से लेकर जनवरी तक लगा सकते है । उन्नत किस्मों का ४ कि.ग्रा. तथा संकर किस्मों का १.५ - २ कि.ग्रा. बीज को ४ से ६ घंटे तक भिगोयें तथा छाया में सुखाकर २ ग्राम वैवीस्टीन या ३ ग्राम थीरम प्रति कि.ग्रा. बीज के हिसाब से उपचारित करें । उन्नत किस्मों को १८ इंच पर तथा संकर किस्मों को २४ इंच दूरी पर लगायें तथा पौधों में १२ इंच दूरी रखें तथा बीज को २ इंच गहरा बोये । बीजाई पर आधा बोरा यूरिया व 1 बोरा सिंगल सुपर फास्फेट उन्न्त किस्मों में डालें तथा संकर किस्मों में पौना बोरा यूरिया व सवा एक बोरा सिंगल सुपर फास्फेट डालें । उन्नत किस्मों में हरियाणा सूरजमुखी न.-१ तथा संकर किस्मों में डी.के ३८९०, पी ए सी ३०२, एस एच ३३२२, एन एस एफ एच ५९२, जी के एस एफ एच २००२, ज्वालामुखी, सनजीन ८५ किस्में ८ - १० क्विंटल पैदावार दे देती हैं ।

गन्ना - गन्न्ने की कटाई जोरों पर है । कटाई जमीन की सतह के साथ करें तथा गन्ना मिलों की मांग के अनुसार करें । मोढी फसल के लिए कटाई के तुरंत बाद सिंचाई कर दें । कटाई के बाद पत्तियों को जला दें या खेत से हटा दें । खाली स्थानों में नई पोरियां लगा दें ।

फल - बगीचों में खाद देने का समय है । आम, नीबूं जाति व अनार के पौधों में गोबर की खाद १५ से २० कि.ग्रा. प्रति पौधा प्रति वर्ष के हिसाब से दें । पांच वर्ष या उपर के पौधों में ७५ से १०० कि.ग्रा. प्रति पौधा दें । खाद देने के साथ गुडाई भी करें । नीबूं में केकंर रोग की रोकथाम के लिए २० मि.ग्रा. स्ट्रप्टोसाइकिलन को २५ ग्राम कोपर सल्फेट के साथ २०० लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें । आम के पेडों में मीलीबग के बच्चों को चढने से रोकने के लिए पोलिथिन की २ फुट चौडी पट्टी कसकर लपेट दें तांकि बच्चे फिसलकर नीचे गिर जाये । फिर इन्हें इकठ्ठा करके जला दें । बेर में सफेद चुर्णी रोग दिखाई देने पर घुलनशील गंधक ४०० ग्राम को २०० लीटर पानी में घोलकर पेडों पर छिडकें । फलमक्खी नियंत्रण के लिए १.५ मि.ली. एण्डोसल्फान ३५ ई सी प्रति लीटर पानी में मिलाकर १५ दिनों के अन्तर पर छिडके । आड़ू - दिसम्बर में आड़ू के मिट्टी रहित पौधें लगाए जा सकते है इसके लिए शरबती, सफेदा, मैचलैस, पलोरडासन किस्में उपयुक्त हैं । 1 वर्ग मीटर के गढ्ढे खोदें तथा उपर की आधा मीटर मिट्टी में सडी-गली देशी खाद बराबर मात्रा में मिलाकर २० मिली. क्लोरपायरीफास २० इ.सी. डालकर भर दें । पौधें लगाने से पहले गढ्ढे पानी से भरें तथा फिर मिट्टी डालकर बराबर करने बाद पेड लगाए तथा पानी दें । पौधों में यूरिया, सिंगल सुपर फास्फेट तथा म्युरेट आफ पोटाश प्रति पौधा प्रति वर्ष आयु के हिसाब से भी डालें ।

सब्जियां - प्याज की नर्सरी जो अक्टूबर-नवम्बर में लगाई गई थी अब रोपाई के लिए तैयार है । लाईन में ६ इंच व पौधों में ४ इंच दूरी रखें । १० टन कम्पोस्ट, पौना बोरा यूरिया, २.५ बोरे सिंगल सुपर फास्फेट व 1 बोरा म्युरेट आफ पोटाश डालें तथा रोपाई के तुरंत बाद सिंचाई करें । इसके बाद सर्दियों में १५ के अन्तर सिंचाई करते रहे । खरपतवार नियंत्रण के लिए स्टोम्प १४०० मि.ली. २०० लीटर पानी में मिलाकर रोपाई के बाद छिडके तथा तुरंत पहली सिंचाई कर दें । बैगन व टमाटर - में फलछेदक से बचाव के लिए नवम्बर में बताई गई विधि अपनाए । मूली, शलजम, गाजर में मिट्टी चढ़ाए ताकि पैदावार अधिक हो । बाकी सब्जियों को १५-२० दिन में हल्की सिंचाई करते रहे तथा पोलिथिन सीट से ढककर पाले से भी बचाव रखें ।

फूल - गुलाब के पौधों में काट-छांट तथा गुडाई के लिए उपयुक्त समय है । गुडाई के बाद गुलाब के तनों व जडों को धूप लगाने तथा कम्पोस्ट देने से बसंत ऋतु में अच्छे फूल आते हैं । इस माह गुलाब के पौधों के तनों की कलम भी आसानी से लग जाती है । बाकी फूलों में जरूरत के अनुसार व देशी खाद, पानी व गुडाई देते रहें । पाले से पौधों का बचाव रखें ।

किसान भाई दिसम्बर में होने वाली बाकी क्रियाओं के बारे में जानकारी हमसे सीधा फोन (०१२०-२५३५६२८) से भी अथवा ई-मेल : wsguleria@kribhco.net से भी संपर्क कर सकते है । अगले माह फिर मिलेगें । जयहिंद !